2. वर्ण विचार

व्याकरण शास्त्र के तीन मुख्य अंगों में से पहला अंग है– वर्ण विचार। इसके अंतर्गत वर्णों के उच्चारण और लेखन के तरीकों पर विचार किया जाता है। वर्ण भाषा की सबसे छोटी ध्वनि होती है जिसके और टुकड़े नहीं हो सकते।

शिक्षण-संकेत

- ❖ शिक्षक/शिक्षिका छात्रों को हिंदी वर्णमाला की पुनरावृत्ति करने को कहें। उनसे वर्णमाला सुनें।
- ❖ पूछें, हिंदी वर्णमाला में स्वर कितने होते हैं। व्यंजनों की संख्या कितनी होती है। संयुक्त व्यंजन कौन-से हैं आदि। तदुपरांत पूछें, वर्ण से आप क्या समझते हैं।
- ❖ फिर समझाएँ, मुँह से निकलने वाली छोटी से छोटी ध्वनि ही वर्ण होती है।
- ❖ वर्णमाला में वर्णों के वर्गों से अवगत करवाएँ।
- ❖ वर्णों के भेदों-स्वर तथा व्यंजन के भेदों के बारे में विस्तार से समझाएँ।
- ❖ संयुक्त व्यंजन – क्ष, त्र, ज्ञ, श्र, संयुक्ताक्षर तथा द्वित्व व्यंजन को उदाहरणों द्वारा समझाएँ तथा बच्चों से इनका अंतर बताने को कहें।
- ❖ अनुस्वार, अनुनासिक स्पष्ट करें।
- ❖ आगत स्वर ऑ और नुक्ता तथा ड़ ढ़ के प्रयोग पर ध्यान दिलाएँ।
- ❖ स्वर के स्वतंत्र रूप और मात्रा रूप के बारे में छात्र-छात्राओं से पूछें।
- ❖ र के प्रयोग पर विशेष ध्यान दिलाएँ।
- ❖ वर्ण-विच्छेद करना छात्र पिछली कक्षाओं में सीख चुके हैं। ब्लैकबोर्ड पर कुछ शब्द लिखकर छात्रों से उनका वर्ण-विच्छेद करवाएँ। सुनिश्चित कर लें कि छात्र-छात्राएँ विषय में रुचि ले रहे हैं।
- ❖ बीच-बीच में पूछें व्यंजन को स्वर रहित कैसे लिखा जाता है।
- ❖ छात्रों को कुछ शब्द लिखने को कहें और उनकी अशुद्धियों को दूर करवाएँ।
- ❖ सभी छात्रों पर ध्यान दें।
- ❖ 'अब तक हमने सीखा' द्वारा पाठ के मुख्य बिंदुओं की पुनरावृत्ति करवा लें।